International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 17-04-2026, Accepted: 18-05-2026, Published: 02-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 144-146

एनीमिया जागरूकता जन–आंदोलन : इंदौर मॉडल का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन (सामुदायिक स्वास्थ्य, जनभागीदारी एवं होम्योपैथिक दृष्टिकोण पर आधारित शोध–पत्र)

डॉ. ए. के. द्विवेदी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शरीर क्रिया विज्ञान एवं जैवरसायन विभागए एस.के.आर.पी. गुजराती होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12143

सारांश

भारत में एनीमिया आज भी एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में विद्यमान है, विशेषकर महिलाओं, किशोरियों एवं बच्चों में इसकी व्यापकता चिंताजनक है। पिछले दो दशकों में इंदौर में संचालित "एनीमिया जागरूकता जन–आंदोलन" ने सामुदायिक सहभागिता, पोषण शिक्षा, जनजागरूकता, स्क्रीनिंग शिविर तथा होम्योपैथिक सहयोग के माध्यम से एक प्रभावी सामाजिक मॉडल प्रस्तुत किया है।

यह शोध–पत्र इंदौर मॉडल के विभिन्न आयामों — जनभागीदारी, पोषण आधारित हस्तक्षेप, स्वास्थ्य शिक्षा, सामाजिक जागरूकता एवं होम्योपैथिक चिकित्सा सहयोग — का विश्लेषण करता है तथा यह दर्शाता है कि कैसे यह अभियान एक स्थानीय प्रयास से राष्ट्रीय प्रेरणा मॉडल के रूप में विकसित हुआ।

अध्ययन में यह पाया गया कि यदि एनीमिया उन्मूलन को केवल चिकित्सा समस्या न मानकर सामाजिक एवं पोषणीय चुनौती के रूप में देखा जाए, तो व्यापक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। यह मॉडल भारत सरकार के "एनीमिया मुक्त भारत अभियान" को सामुदायिक स्तर पर मजबूत करने की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मूल शब्दः नीमिया, जन–जागरूकता, होम्योपैथी, पोषण, सामुदायिक स्वास्थ्य, इंदौर मॉडल

एनीमिया विश्वभर में विशेषकर विकासशील देशों की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। भारत में महिलाओं, किशोरियों एवं बच्चों में आयरन की कमी के कारण होने वाला एनीमिया व्यापक स्तर पर पाया जाता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के अनुसार भारत में बड़ी संख्या में महिलाएँ एवं बच्चे एनीमिया से प्रभावित हैं, जो राष्ट्र की उत्पादकता, मातृ स्वास्थ्य, शारीरिक विकास तथा मानसिक क्षमता को प्रभावित करता है।

मध्यप्रदेश में भी एनीमिया की समस्या लंबे समय तक गंभीर रही। इस चुनौती को सामाजिक आंदोलन का स्वरूप देने हेतु डॉ. ए.के. द्विवेदी द्वारा "एनीमिया जागरूकता जन–आंदोलन" प्रारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य केवल रोग उपचार नहीं बल्कि जागरूकता, रोकथाम एवं पोषण शिक्षा के माध्यम से स्वस्थ समाज का निर्माण करना था।

इंदौर का एनीमिया जागरूकता आंदोलन देश के लिए बना आदर्श मॉडल

डॉ. ए.के. द्विवेदी के अभियान का दिखने लगा असर

■ पिछले दो दशकों में कई राज्यों में एनीमिया की स्थिति चिंताजनक रूप से बढ़ी वहीं मध्यप्रदेश में 2.3 प्रतिशत की कमी

इंदौर

इंदौर का एनीमिया जागरुकता आंदोलन आज देश के लिए आदर्श मॉडल बन गया हैं। मप्र के राज्यपाल मंगुभाई पटेल, प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भारत सरकार के आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रतापराव जाधव सहित देशभर के अन्य प्रमुख जिम्मेदारों ने इंदौर की सराहना की हैं। डॉ. अश्विनी कुमार द्विवेदी (ए.के. द्विवेदी) ने देश में एनीमिया जागरुकता के क्षेत्र में एक अग्रणी, समर्पित व प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रुप में नाम स्थापित किया हैं। उनके नेतृत्व में इंदौर का एनीमिया जागरुकता जन-आंदोलन आज देश के लिए एक मॉडल ही नहीं बन गया है बल्कि प्रदेश को एनीमिया मुक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो रहा हैं।

मुख्यमंत्री ने की सराहना, भोपाल में मिला सम्मान

भोपाल में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में डॉ. द्विवेदी ने एनीमिया जागरूकता अभियान की विस्तृत रिपोर्ट मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सामने प्रस्तुत की। उन्होंने अभियान पर आधारित पुस्तक की पहली प्रति भी मुख्यमंत्री को भेंट की। मुख्यमंत्री ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे अत्यंत अनुकरणीय और समाजोपयोगी प्रयास बताया। उन्होंने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार इस प्रकार की जनहितकारी पहलों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी। डॉ. द्विवेदी ने बताया इस अभियान के माध्यम से सरकार की ओर से संचालित एनीमिया व सिकल सेल रोग से संबंधित योजनाओं का भी व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

20 लाख लोगों तक पहुंचा अभियान

डॉ. द्विवेदी के नेतृत्व में एनीमिया जागरुकता रथ के माध्यम से घर-घर जाकर लोगों को जागरुक किया गया। डॉ. द्विवेदी की ओर से संचालित एनीमिया जागरूकता रथ को फरवरी 2026 में मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह अभियान प्रदेश के विभिन्न जिलों में पहुंचते हुए 20 लाख से अधिक लोगों तक जागरूकता संदेश पहुंचाने में सफल रहा। मार्च 2026 में इस अभियान की विस्तृत रिपोर्ट मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और भारत सरकार के आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव को प्रस्तुत की गई। इस जनसेवा कार्य में इंदौर सांसद शंकर लालवानी का भी सक्रिय सहयोग रहा।

पोषण आधारित समाधान और जनभागीदारी

अभियान के अंतर्गत लोगों को पारंपरिक व सुलभ पोषण अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। विशेष रूप से गुड़ और चना जैसे सरल उपायों को बढ़ावा देकर यह संदेश दिया गया कि एनीमिया की रोकथाम केवल दवाओं से नहीं, बल्कि सही पोषण और जागरूकता से संभव है। डॉ. द्विवेदी ने बताया एनीमिया केवल रक्त की कमी नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जो शरीर की ऊर्जा, रोग प्रतिरोधक क्षमता, मानसिक विकास और मातृ स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

नेशनल मॉडल के रूप में उभरता अभियान

डॉ. द्विवेदी का यह अभियान अब एक राष्ट्रीय मॉडल के रूप में विकसित हो रहा है, जिसे पूरे देश में लागू किया जा सकता है। जनभागीदारी, सरल संदेश, पोषण आधारित समाधान और चिकित्सा सेवाओं के समन्वय के कारण यह पहल स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान कर रही है।

रिसर्च व उत्कृष्टता की दिशा में पहल

डॉ. द्विवेदी के प्रयासों से होम्योपैथी के क्षेत्र में अनुसंधान को नई दिशा मिल रही है। केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) के सहयोग से उन्नत रिसर्च गतिविधियों को बढ़ावा देने की प्रक्रिया जारी है। इस संदर्भ में आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव ने सेंटर फॉर एक्सीलेंस इन होम्योपैथी के रूप में इस पहल को विकसित करने का सुझाव दिया और केंद्र सरकार की ओर से पूरी तरह से सहयोग का आश्वासन दिया।

व्यक्तित्व योगदान

डॉ. ए. के. द्विवेदी लगभग 30 वर्षों से चिकित्सा, शिक्षा व अनुसंधान के क्षेत्र में निरंतर सेवाएं दे रहे हैं। वे आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) के वैज्ञानिक सलाहकार मंडल के सदस्य हैं। वर्तमान में वे एस.के.आर.पी. गुजराती होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर में प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

एनीमिया मुक्त समाज का निर्माण करना है लक्ष्य

एनीमिया जागरुकता जन-आंदोलन का शुभारंभ राज्यपाल ने किया, मुख्यमंत्री ने सराहना की, आयुष मंत्री के साथ संवाद और जनभागीदारी आधारित मॉडल इन सभी ने एनीमिया जागरूकता अभियान को एक सशक्त राष्ट्रीय जन-आंदोलन बना दिया है। डॉ. द्विवेदी का लक्ष्य एनीमिया मुक्त समाज का निर्माण करना है और उनके निरंतर प्रयास इस दिशा में भारत को एक स्वस्थ भविष्य की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

राज्यपाल ने किया शुभारंभ, जन-आंदोलन को मिली दिशा

डॉ. द्विवेदी के एनीमिया जागरुकता अभियान का शुभारंभ मप्र के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर अभियान को एक व्यापक जन-आंदोलन के रुप में आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया। राज्यपाल ने इस पहल को समाज के स्वास्थ्य सुधार के लिए बहुत जरुरी बताते हुए इसकी सराहना की।

चिकित्सा क्षेत्र में विशेष पहचान

डॉ. द्विवेदी की विशेष पहचान अप्लास्टिक एनीमिया जैसी जटिल बीमारी के होम्योपैथिक उपचार के लिए है। उनकी विशेषज्ञता के कारण देश-विदेश से मरीज इंदौर आकर उपचार प्राप्त करते हैं, जो उनके प्रति लोगों के विश्वास को दर्शाता है। डॉ. ए. के. द्विवेदी का कार्य चिकित्सा, समाज सेवा और अनुसंधान का अद्भुत संगम है।

डॉ. ए.के.द्विवेदी के अभियान का असर दिखने लगा देशभर में

प्रदेश ही नहीं बल्कि देशभर में महिलाओं में एनीमिया (खून की कमी) एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है। हालिया रिपोर्टों में कुछ राज्यों में सकारात्मक बदलाव भी सामने आए हैं। विशेष रूप से मध्य प्रदेश में एनीमिया से पीड़ित मरीजों की संख्या में कमी दर्ज की गई है, जो सतत् जन-जागरूकता, समय पर जांच और उपचार के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। इस सुधार के पीछे इंदौर के वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक डॉ. ए.के. द्विवेदी के 27 वर्षों से चल रहे एनीमिया जागरूकता अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनके नेतृत्व में चलाए जा रहे अभियान ने न केवल मध्य प्रदेश बल्कि देशभर में जनजागरण का व्यापक प्रभाव डाला है।

राष्ट्रीय स्तर पर संवाद, आयुष मंत्री से महत्वपूर्ण चर्चा

भारत सरकार के आयुष मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रतापराव जाधव के इंदौर आगमन पर एयरपोर्ट पर हुई मुलाकात में डॉ. द्विवेदी ने एनीमिया जागरूकता जन-आंदोलन की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। इस दौरान उन्होंने अभियान की उपलब्धियों, समाज पर उसके प्रभाव और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा करते हुए आगे सहयोग का आग्रह किया।

प्रतीकात्मक छवि

अध्ययन के उद्देश्य

1. एनीमिया जागरूकता अभियान के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन करना।
2. सामुदायिक सहभागिता आधारित मॉडल की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
3. होम्योपैथिक सहयोग एवं पोषण शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. इंदौर मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने की संभावनाओं का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया:

- जागरूकता अभियानों के प्रत्यक्ष अवलोकन
- स्वास्थ्य शिविरों के अभिलेख
- सामुदायिक प्रतिक्रिया
- विभिन्न समाचार पत्रों एवं सामाजिक अभिलेखों का विश्लेषण
- स्वास्थ्य विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों के अनुभव

अध्ययन में गुणात्मक (Qualitative) एवं आंशिक मात्रात्मक (Quantitative) दृष्टिकोण अपनाया गया।

एनीमिया : एक सामाजिक एवं स्वास्थ्य चुनौती

एनीमिया केवल रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी नहीं है, बल्कि यह समाज की पोषणीय स्थिति, आर्थिक असमानता एवं स्वास्थ्य जागरूकता का दर्पण भी है।

एनीमिया के प्रमुख कारण

- आयरन युक्त भोजन की कमी
- कुपोषण
- महिलाओं में गर्भावस्था एवं मासिक धर्म संबंधी कारण
- स्वास्थ्य शिक्षा का अभाव
- संक्रमण एवं दीर्घकालिक रोग

इसके परिणामस्वरूप

- कमजोरी एवं थकान
- रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी
- बच्चों में मानसिक एवं शारीरिक विकास में बाधा
- मातृ मृत्यु दर में वृद्धि
- कार्य क्षमता में कमी

इंदौर मॉडल की विशेषताएँ

जन–आंदोलन आधारित दृष्टिकोण

इंदौर मॉडल की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसे केवल चिकित्सा कार्यक्रम न रखकर सामाजिक आंदोलन का स्वरूप दिया गया। इसमें समाजसेवी संस्थाएँ, विद्यार्थी, चिकित्सक, शिक्षण संस्थान एवं आम नागरिक जुड़े।

घर–घर जागरूकता अभियान

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं विद्यार्थियों द्वारा घर–घर जाकर एनीमिया के लक्षण, रोकथाम एवं पोषण संबंधी जानकारी दी गई। इससे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में व्यापक जागरूकता विकसित हुई।

पोषण आधारित समाधान

अभियान में यह संदेश दिया गया कि एनीमिया का स्थायी समाधान केवल दवाओं से नहीं बल्कि संतुलित पोषण से संभव है।

विशेष रूप से निम्न खाद्य पदार्थों पर जोर दिया गया

- हरी पत्तेदार सब्जियाँ
- चुकंदर
- गुड़ एवं चना
- दालें एवं अंकुरित अनाज
- आयरन युक्त पारंपरिक भोजन

होम्योपैथिक चिकित्सा सहयोग

अभियान में आवश्यकतानुसार होम्योपैथिक चिकित्सा सहयोग भी प्रदान किया गया। यह दृष्टिकोण रोगी–केंद्रित एवं समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा को मजबूत करता है।

सामाजिक प्रभाव

अध्ययन में पाया गया कि अभियान के परिणामस्वरूप:

- एनीमिया के प्रति जन–जागरूकता में वृद्धि हुई।
- महिलाओं एवं किशोरियों में स्वास्थ्य परीक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ।
- विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम बढ़े।
- पोषण संबंधी व्यवहार में सुधार देखा गया।
- सामुदायिक सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिकता

इंदौर मॉडल "एनीमिया मुक्त भारत अभियान" के लिए एक व्यवहारिक सामुदायिक मॉडल प्रस्तुत करता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ — जनभागीदारी, स्वास्थ्य शिक्षा, पोषण जागरूकता एवं स्थानीय नेतृत्व — इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने योग्य बनाती हैं।

यदि प्रत्येक जिले में इसी प्रकार जन–जागरूकता आधारित अभियान संचालित किए जाएँ, तो एनीमिया नियंत्रण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता बढ़ सकती है।

चर्चा

भारत में स्वास्थ्य कार्यक्रमों की सफलता तभी संभव है जब समाज स्वयं सहभागी बने। इंदौर मॉडल यह सिद्ध करता है कि सामाजिक चेतना एवं स्वास्थ्य शिक्षा किसी भी जनस्वास्थ्य अभियान की सफलता की कुंजी हैं।

इस मॉडल में चिकित्सा, शिक्षा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय दिखाई देता है। विशेष रूप से युवाओं एवं विद्यार्थियों की सहभागिता ने इसे एक सतत जन–अभियान का स्वरूप प्रदान किया।

निष्कर्ष

एनीमिया उन्मूलन केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है; इसके लिए जन–जागरूकता, पोषण शिक्षा एवं सामाजिक सहभागिता अनिवार्य है।

डॉ. ए.के. द्विवेदी द्वारा प्रारंभ किया गया इंदौर का एनीमिया जागरूकता जन–आंदोलन सामुदायिक स्वास्थ्य का एक प्रेरणादायक मॉडल बनकर उभरा है। यह मॉडल न केवल मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश में एनीमिया नियंत्रण हेतु मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

सुझाव

1. प्रत्येक जिले में एनीमिया जागरूकता रथ संचालित किए जाएँ।
2. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर पोषण शिक्षा अनिवार्य की जाए।
3. सामुदायिक स्वास्थ्य अभियानों में युवाओं की सहभागिता बढ़ाई जाए।
4. होम्योपैथी सहित समग्र चिकित्सा पद्धतियों को सहयोगी भूमिका में शामिल किया जाए।
5. महिलाओं एवं किशोरियों के लिए नियमित स्वास्थ्य स्क्रीनिंग कार्यक्रम चलाए जाएँ।

लेखक परिचय

डॉ. ए. के. द्विवेदी, बीएचएमएस (स्वर्ण पदक विजेता), एमडी, एमबीए, पीएच.डी., पिछले 25 वर्षों से पंजीकृत होम्योपैथ हैं। वे एस.के.आर.पी. गुजराती होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, इंदौर में फिजियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष हैं। वे देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत की कार्यकारी परिषद के सदस्य हैं। वे आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड (सीसीआरएच) के सदस्य, शिलांग मेघालय, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एनईएएच) के सदस्य, मध्य प्रदेश चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश (भारत) के अकादमिक बोर्ड के सदस्य हैं। वे एडवांस्ड होमियो हेल्थ सेंटर एंड होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत के निदेशक और सीईओ हैं, और "सेहत एवं सूरत" (हिंदी मासिक चिकित्सा पत्रिका) के संपादक हैं।

संदर्भ सूची

1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) रिपोर्ट
2. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
3. एनीमिया मुक्त भारत दिशानिर्देश
4. एनीमिया पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की रिपोर्ट
5. सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता रिकॉर्ड और अभियान दस्तावेज़
6. विभिन्न समाचार–पत्र एवं स्वास्थ्य जागरूकता अभिलेखों से क्रोएशियाई सामग्री